9

छह घण्टे, 1

मत्ती 27:33-44; मरकुस 15:22-32; लूका 23:33-43; यूहन्ना 19:17-27

''जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पहुंचे, तो उन्होंने वहां उसे और उन कुकर्मियों को भी, एक को दाहिनी और दूसरे को बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाया'' (लूका 23:33)।

छह घण्टे! मुक्ति ... जीवन ... आशा ... स्वर्ग! यीशु छह घण्टे क्रूस पर रहा (मरकुस 15:25-37)। एक पहर से तीसरा पहर (यहूदी समय) सुबह 9 से शाम 3 बजे के बराबर है। परमेश्वर ने इस समय का समान बंटवारा किया और दोपहर से तीसरे पहर तक अन्धेरा कर दिया (मत्ती 27:45; मरकुस 15:33; लूका 23:44)। यीशु की मृत्यु तीसरे पहर हुई।

यीशु की मृत्यु इतिहास की सबसे प्रसिद्ध मृत्यु है। यह सब कुछ है, जो मसीहियत के पास है, जो मसीहियत चाहती है या जिसकी इसे आवश्यकता है। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं'' (1 कुरिन्थियों 2:2)। पौलुस को जो कुछ पता था और जितना उसने प्रचार किया, यह सब उसका सार है (1 कुरिन्थियों 1:17-25)।

विवरण बताए नहीं गए

हमें बहुत कम जानकारी है! विवरण बहुत कम हैं। क्रूस पर चढ़ाए जाने का एकमात्र हवाला यूहन्ना ही है। लूका (इतिहासकार) ने क्रूस को एक ही आयत में समेट दिया: ''उसको वहां क्रूस पर चढ़ाया गया'' (लूका 23:33)। हमें उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के बजाय उसके दफ़नाए जाने के बारे में अधिक जानकारी है। हमारे पास उत्तरों की अपेक्षा प्रश्न अधिक हैं।

हमें क्रूस के आकार की जानकारी नहीं है कि कूस कैसा था। ''X'' के आकार के क्रूस का तो सवाल ही नहीं है। टाऊ क्रूस भी होता है, जो अंग्रेज़ी के बड़े अक्षर ''T'' जैसा होता है। पिलातुस ने यीशु के सिर पर एक तख्ती लगाई थी, इसका अर्थ है कि यह क्रूस नहीं हो सकता। जोड़ के चिह्न जैसा लातीनी क्रूस इस्तेमाल किया गया हो सकता है। यह वही क्रूस है, जो विश्व भर में माना जाता है और कला, आभूषणों और भवन निर्माण में हर जगह मिलता है। किस्से-कहानियों में, जोड़ के चिह्न को ''क्रूस का चिह्न'' कहा जाता है।

पिलातुस ने एक पट्टी लिखवा कर क्रूस पर चढ़े यीशु के सिर पर लगा दी (मत्ती 27:37;

मरकुस 15:26; लूका 23:38; यूहन्ना 19:19)। हर विवरण में अन्तर है, परन्तु सब में बात एक ही है। टीकाकारों की दिलचस्पी शब्दों के चयन में नहीं, बल्कि इस बात में थी कि उनके द्वारा दिया जाने वाला संदेश क्या है।

यीशु को क्रूस पर कैसे चढ़ाया गया? हमें नहीं मालूम। हम इतना जानते हैं कि वह सप्ताह के पहले दिन अर्थात रविवार को जी उठा था (मत्ती 28:1-7; मरकुस 16:2-9; लूका 24:1-7; यूहन्ना 20:1-10)। यह कोई बहस का मुद्दा नहीं है। आरम्भिक कलीसिया सप्ताह के इसी दिन इकट्ठी होती थी (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2)।

परन्तु, क्रूस पर चढ़ाए जाने का दिन नहीं बताया गया। उस दिन की खोज के लिए, हमें उलटी गिनती गिननी पड़ेगी। सुसमाचार की पुस्तकों में दस बार[1] यीशु का जी उठना ''तीसरे दिन'' बताया गया है।[2] समय पर तो बहस होती है, पर बाइबल बताती है कि क्रूस पर चढ़ाए जाने का दिन तैयारी का दिन, अर्थात सब्त से पहले का दिन था (मरकुस 15:42; लूका 23:50-56; यूहन्ना 19:31)।

हम जानते हैं कि यीशु क्रूस पर कितना समय रहा: छह घण्टे। ये घण्टे समय के बीच एक फन्नी है।

पहले तीन घण्टे

उस समय यीशु को पित्त मिला हुआ दाखरस पीने के लिए दिया गया (मत्ती 27:34; KJV)। आश्चर्य की बात है! उसने इसे लेने से इनकार कर दिया। यीशु ने दर्द निवारक दवा लेने से भी इनकार कर दिया। उसने बेहोशी वाली दवा भी नहीं चाही। वह क्रूस पर पूरे होश में रहना चाहता था। उसने अपनी कार्य शक्ति की कीमत पर पीड़ा को सुन्न नहीं करना था। पीड़ा और अपमान क्रूस पर बड़ी बात नहीं थी। क्रूस पर चढ़ा केवल यीशु ही जानता था कि उस पर क्या बीत रही है।

अभी उसे क्रूस पर चढ़ाया ही गया था कि लोग उसे उतारने की जिद करने लगे (मत्ती 27:39-43; मरकुस 15:29-32; लूका 23:35-37)। डाकू भी उनके साथ मिल गए (मत्ती 27:44; मरकुस 15:32; लूका 23:39)। कितनी मूर्खता भरी हरकत थी! इससे विश्वासी या अविश्वासी होने की दुष्टता का पता चलता है। मनुष्य परमेश्वर को यह बताने की हिम्मत कैसे कर लेता है कि वह किन शर्तों पर उस पर विश्वास करेगा। यदि यीशु क्रूस से नीचे आ जाता तो पापियों ने बिना आशा ही मर जानी थी। यीशु ने जन्म ही मरने के लिए लिया था। वह मरा ताकि हम जीने के लिए जन्म ले सकें (रोमियों 5:10)। परमेश्वर जो धर्मी और पवित्र है, वह अपने स्वभाव के कारण पाप को दण्ड दिए बिना किसी को क्षमा नहीं कर सकता। कलवरी में यीशु ने हमारे पाप का दण्ड अपने ऊपर ले लिया।

क्षमा किए जाने वाले पापों के भी परिणाम हैं। क्रूस पर अपनी पहली प्रार्थना में यीशु ने परमेश्वर को यह पाप अपने सताने वालों पर न लाने के लिए कहा; पर उनका पाप तो सब पापों से बड़ा था! परमेश्वर ने यरूशलेम को नष्ट कर दिया। बाइबल के इतिहास में इस्राएल के अस्तित्व में रहने का एक ही कारण था, मसीह का आना। यीशु मसीहा के बारे में की गई सब भविष्यवाणियों को पूरा करते हुए आया। यहूदियों ने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया! विडम्बना है कि इसने उन्हें ''मसीहा के काम'' से बाहर निकाल दिया। उन्होंने कैसर को राजा मानकर परमेश्वर को अपना

राजा मानने से इनकार कर दिया (यूहन्ना 19:14, 15)। यीशु का खून अपने ऊपर लेकर और अपने पाप को अपनी संतान पर डालकर वे और भी गिर गए थे (मत्ती 27:25)।

जब यीशु ने दोबारा बात की तो उसने अपने साथ क्रूस पर चढ़े डाकू को सम्बोधित किया। सम्पूर्ण मनुष्य जाति के पापों के लिए मरते समय यीशु के लिए एक पापी को क्षमा करना बिल्कुल सही था। लूका 23:39-43 में हुई वार्तालाप का अध्ययन करें। डाकू को मरते-मरते सच्चा धर्म मिल गया। हैरानी की बात है! क्रूस के पास आए और उसके निकट ही खड़े रहे। क्रूस ने डाकू को बचा लिया; क्रूस हमें भी बचा सकता है! हमें हमारी सोच, विचार, फिलासफी, रहस्यवाद या अज्ञानता बचा नहीं सकते, केवल यीशु ही हमें बचा सकता है।

कष्टदायक मृत्यु के बावजूद यीशु ने अपनी माता मरियम की देखभाल की। उसने यूहन्ना से कहा कि वह उसकी देखभाल अपनी मां समझकर करे (यूहन्ना 19:26, 27)। कइयों का विचार है कि यूहन्ना उसे अपने घर ले गया। रुकें और विचार करें। उसके दो पुत्रों ने बाद में नये नियम की पुस्तकें (याकूब और यहूदा) लिखीं। मरियम और उसके बेटे यीशु के जी उठने के थोड़ी देर बाद ऊपर वाले कमरे में प्रार्थना के लिए बैठे थे (प्रेरितों 1:13, 14)। यह सपष्ट है कि उन्होंने अपनी मां की आवश्यकताओं का ध्यान रखा होगा। मरियम को *क्रूस पर,* क्रूस के कदमों में और क्रूस के समय सहायता की आवश्यकता थी। यीशु कह रहा था, ''मेरी मां के साथ रह!''

गुलगुता बहुत बुरी जगह थी। क्रूस सिनेमाघर में दिखाई जाने वाली फिल्म से अधिक डरावना है। परमेश्वर ने वही किया जो स्नेही पिता कर सकता था। उसने पाप के स्वर्गीय न्याय को सहने के लिए अपने पुत्र को दे दिया; उसने अपने पुत्र से अपना मुंह छिपा लिया।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणियां

[1]सुसमाचार की पुस्तकें मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना, नये नियम की पहली चार पुस्तकें हैं। ये पुस्तकें यीशु के जीवन, सेवकोई, मृत्यु और जी उठने की कहानी बताती हैं। [2]देखें मत्ती 16:21; 17:23; 20:19; 27:63; मरकुस 9:31; 10:34; लूका 9:22; 13:32; 18:33; 24:7.